क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

THE MENTORING PROJECT

परमेश्वर का समय: परमेश्वर की योजना पर भरोसा करना सीखना

ALEX HAMMOND

परमेश्वर का समय: परमेश्वर की योजना पर भरोसा करना सीखना

ALEX HAMMOND

(एलेक्स हैमण्ड)

विषय-सूची

आपको भरोसे की समस्या है 4

एक ऐसा परमेश्वर जो हमारे भरोसे के योग्य है 9

यीशु की तरह भरोसा करना 15

भरोसे में   कैसे बढ़ें.......... 21

1

आपको भरोसे की समस्या है

“परन्तु मुझे यह अभी चाहिए!” उस बच्चे की अधीरता अब भयंकर जिद में बदल रही थी। यह मायने नहीं रखता कि माँ ने उसे कितने भी तर्क देकर बता दिया हो, परन्तु वह अपने बेटे को यह नहीं समझा पाई कि केक अभी पूरी तरह से पका नहीं है, और पकने के बाद भी, उस पर सजावट करने से पहले उसे ठण्डा होने देना आवश्यक होगा। वह जानती है कि अधपका केक अच्छा नहीं लगता - और स्प्रिंकल्स, फ्रॉस्टिंग और मोमबत्तियाँ लगे हुए - केक के लिए प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी। परन्तु उस बेटे की दृष्टि में, अभी और केक खाने के बीच का समय उसे अनन्तकाल जैसा लग रहा था, और जो स्त्री उसे वह वस्तु खाने से रोक रही थी, शायद वही इस बात को सबसे अच्छे से जानती थी। इसलिए, अपनी जिद पूरी करवाने के लिए, वह छोटा बच्चा अपनी चम्मच उठाकर उसे कमरे के दूसरी तरफ फेंकने की तैयारी करता है, क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं कि जिसे वह चाहता है, उसे पाने का यही आसान तरीका है।

“परन्तु मुझे यह अभी चाहिए!” अन्तिम बार ये शब्द आपके मुँह से कब निकले थे? या, इसके बजाय, अन्तिम बार आपने ये शब्द अपने हृदय में कब दोहराए थे? अन्तिम बार आपको यह दृढ़ विश्वास कब हुआ था कि सबसे अच्छा तो यही होता कि आपको जो चाहिए था, वह आपको तभी मिल जाता, जब आप उसे चाहते थे?

शायद मैं आपको नहीं जानता, और शायद इस जीवन में हम कभी आमने-सामने न मिल पाएँ, फिर भी मुझे निश्चय है कि आप धीरज धरने और परमेश्वर के समय पर भरोसा करने में संघर्ष करते होंगे। हो सकता है कि आपके जीवन के हर क्षेत्र में ऐसा न हो, परन्तु मुझे लगता है कि यदि आप एक पल रुककर सोचें, तो आप तुरन्त ही अपने जीवन के उन क्षेत्रों के बारे में सोच पाएँगे, जिनमें आप जानते हैं कि आपमें धीरज की कमी है: जैसे केक के पकने की प्रतीक्षा करना; रेस्तराँ में मेज के लिए प्रतीक्षा करना; या अपने आगे वाली गाड़ी के हटने की प्रतीक्षा करना, क्योंकि उसे यह नहीं दिख रहा कि बत्ती हरी हो चुकी है?

और धीरज या भरोसे से जुड़ा हर संघर्ष इतना मूर्खतापूर्ण नहीं होता, जितने कि ये हैं। आप अपने परिवार के उस सदस्य के लिए कब से प्रार्थना कर रहे हैं, जिसने उद्धार नहीं पाया है? आपकी प्रार्थना-डायरी के कितने पन्ने आपके आँसुओं की बूंदों से दागदार हुए, जब आपने परमेश्वर से एक सन्तान पाने की याचना की? कितनी बार आप इस पर हैरान रह गए हैं कि आखिरकार कब प्रभु आपके शरीर की पीड़ा दूर करेगा, ताकि आप फिर से एक सामान्य जीवन में लौट सकें? आप परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करने में फँसे हुए हैं, और यह दु:ख देता है।

स्पष्ट रूप से कहें तो, बदलाव की हर चाहत अविश्वास का उदाहरण नहीं होती। कभी-कभी "हे यहोवा, कब तक?" एक भरोसेमन्द, फिर भी दु:खी हृदय की पुकार होती है। परन्तु हमारा कुड़कुड़ाना शायद ही कभी पूरी तरह भरोसे के साथ होता है, और अक्सर अच्छी बातों के लिए की गई प्रार्थनाएँ भी हमारे हृदयों में अविश्वास उत्पन्न कर सकती हैं। ऐसा विशेष रूप से उस समय अधिक होता है, जब हमें लगता है कि जिस बात की हम इच्छा रखते हैं, उसकी प्राप्ति के लिए हम उसके समीप नहीं हैं। इसी कारण से सुलैमान ने लिखा, "जब आशा पूरी होने में विलम्ब होता है, तो मन शिथिल होता है, परन्तु जब लालसा पूरी होती है, तब जीवन का वृक्ष लगता है" (नीति. 13:12)। धीरज और परमेश्वर के समय के बारे में यह बाइबल की एक महत्वपूर्ण आयत है, जिसे याद रखा जाना चाहिए। प्रतीक्षा करना दु:ख देता है, और दु:खी लोग हमेशा तर्कसंगत रूप से काम नहीं करते।

तो फिर हम धीरज धरने में संघर्ष क्यों करते हैं? परमेश्वर के समय के अधीन होना इतना कठिन क्यों है? यह बात एक अकाट्य सत्य पर आकर टिक जाती है कि: हम पापी हैं।

आपके पाप की समस्या

रुकें! यदि आप भी मेरी तरह हैं, तो हो सकता है कि आप इस खण्ड को छोड़ देने की परीक्षा में पड़ जाएँ, क्योंकि आपने यह बात पहले भी सुनी होगी। कृपया पढ़ते रहें। मुझे निश्चय है कि परमेश्वर के समय पर भरोसा करने में आगे बढ़ने में हमारे विफल होने का कारण यह भी है कि हम परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते पर पाप के प्रभाव को कम करके आँकते हैं।

आप उस परमेश्वर पर, जिसने आपको बनाया है, अविश्वास करने की एक आत्मिक प्रवृत्ति के साथ जन्मे हैं। यद्यपि, हमेशा से ऐसा नहीं था। जब परमेश्वर ने पहली बार आदम और हव्वा को बनाया था, तब उनमें पाप का कोई स्वभाव नहीं था। जब परमेश्वर ने उन्हें निर्देश दिए, तो उनके पास परमेश्वर की भलाई या उसके सही समय पर सन्देह करने का कोई कारण नहीं था। यह महिमामय बात थी।

परन्तु दुर्भाग्य से, यह उस तरह नहीं रह पाया। उत्पत्ति 3 अध्याय की घटना घटी, और हमारे पहले माता-पिता पतित हो गए। मानवजाति द्वारा किया गया सबसे पहला पाप परमेश्वर और उसके चरित्र पर अविश्वास था, जब पुरुष और स्त्री ने शैतान के उस झूठ पर विश्वास कर लिया कि परमेश्वर उनसे कोई अच्छी बात छिपा रहा है। उन्होंने उसे देखा, तोड़ा, और खा लिया; और इसी के साथ, संसार में पाप आ गया। और क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, इसलिए वह अंधकार के साथ संगति नहीं कर सकता। आदम और हव्वा को परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिया गया, और उनके पाप का दुष्परिणाम शारीरिक और आत्मिक मृत्यु हुआ।

अदन में उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन के बाद से, हर मनुष्य पाप के उसी स्वभाव के साथ जन्म लेता है, जो उसे आदम से विरासत में मिला है। हममें से कोई भी पाप से अछूता और परमेश्वर के साथ एक निष्कलंक रिश्ते के साथ जन्म नहीं लेता। हम इस संसार में क्रोध की सन्तान के रूप में आते हैं, और परमेश्वर के विरुद्ध अपने पापों के कारण, उसके धर्मी न्याय के पात्र होते हैं। परमेश्वर की स्तुति हो कि उसने सही समय पर हस्तक्षेप करके उस दण्ड से जिसे हम पाने के योग्य थे, बचने का एक मार्ग दिखाया, और उसने ऐसा प्रभु यीशु को इस संसार में भेजकर किया, कि वह वैसा आज्ञाकारी जीवन जीए जैसा हमें जीना था, और हमारी जगह क्रूस पर मरे। फिर, तीन दिन बाद, यीशु मरे हुओं में से जी उठा और अब वह जीवित है और हर उस

व्यक्ति को पापों की क्षमा प्रदान करता है, जो अपने पापों से मुड़कर, उद्धार के लिए उस पर विश्वास करता है। यदि आपको यह मालूम नहीं है कि परमेश्वर ने आपके पापों को क्षमा कर दिया है या नहीं, तो किसी मसीही मित्र से बात करें और इस विषय में उनसे पूछें। आज आपके लिए इससे अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है कि आप परमेश्वर के समय पर, उसके साथ अपना रिश्ता सुधार लें।

हमारा पाप न केवल जीवन के उस परमेश्वर से जिसने हमें बनाया है, हमेशा के लिए हमारे अलग होने का खतरा उत्पन्न करता है, बल्कि इसने परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते को भी तोड़ दिया है। पाप करने से पहले, आदम और हव्वा प्रभु के साथ पूर्ण सहभागिता का आनन्द लेते थे, परन्तु परमेश्वर के विरुद्ध उनके विद्रोह के परिणामस्वरूप, उनके रिश्ते परमेश्वर के साथ, एक दूसरे के साथ और संसार के साथ टूट गए। उनके हर वंशज की यही स्थिति है, जिसमें आप और मैं भी शामिल हैं। हममें से हर कोई परमेश्वर पर अविश्वास करने की आत्मिक प्रवृत्ति के साथ उत्पन्न होता है।

आपको यह सोचने के लिए सिखाने की आवश्यकता नहीं है कि परमेश्वर आपसे कुछ छिपा रहा है। आप एकदम साफ-सुथरे उत्पन्न नहीं होते और फिर इस संसार के द्वारा गंदे नहीं किए जाते हैं। आप एक पापी स्वभाव के साथ उत्पन्न होते हैं, जो आपको उस परमेश्वर के विपरीत खड़ा कर देता है, जिसने आपको बनाया है। परमेश्वर पर अविश्वास गिरी हुई मानवीय दशा का एक अन्तर्निहित हिस्सा है। और हममें से जो लोग मसीह में हैं, जिन्हें नया जीवन मिला है और जिनमें पवित्र आत्मा वास करता है, उन्हें भी अपने शरीर और उसकी अभिलाषाओं से मल्लयुद्ध करना पड़ता है (रोमियों 7 अध्याय)। परन्तु धन्यवाद हो कि हम पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से अपने स्वर्गीय पिता पर सन्देह करने वाली पाप की परीक्षाओं से लड़ सकते हैं (इस पर बाद में और बात करेंगे)।

हमें यह समझना होगा कि प्रभु पर भरोसा करने का हमारा संघर्ष मूल रूप से एक आत्मिक समय का मुद्दा है, और यह कोई मनोवैज्ञानिक या भावनात्मक मुद्दा नहीं है। हम उस पर भरोसा करने के लिए संघर्ष इसलिए करते हैं, क्योंकि पापी स्वभाव के कारण हमारे हृदय उस पर भरोसा न करने के लिए ही बने होते हैं, और उस पर हमारे भरोसे में बढ़ना पवित्र आत्मा का एक निरन्तर कार्य है। किसी भी स्थायी बदलाव की कोई भी आशा इस पहचान से आरम्भ होनी चाहिए कि हमारी अधीरता वास्तव में परमेश्वर और उसके चरित्र पर एक कलंक है।

जबकि निश्चित रूप से ऐसे कई तरीके मौजूद हैं, जिनसे परमेश्वर पर भरोसा करने में हमारी विफलता के रूप में हमारा पापी स्वभाव प्रकट होता है, और मुझे लगता है कि यहाँ एक बात विशेष उल्लेख किए जाने के योग्य है कि: हम भूल जाते हैं कि हम परमेश्वर नहीं हैं।

आप परमेश्वर नहीं हैं

आप वह परमेश्वर नहीं हैं जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है। चौंकाने वाली बात यह है कि मुझे यह मालूम है। परन्तु रुककर इस बारे में सोचें—परमेश्वर की योजना और उसके समय के प्रति आपकी अधीरता कितनी बार इस सोच का परिणाम होती है कि यदि आपके हाथ में होता, तो आप बातों को बेहतर ढंग से कर सकते थे? “यदि मैं परमेश्वर होता, तो मैं इसे *इस तरह* से करता, और परिस्थितियाँ कहीं अधिक बेहतर होतीं!” कभी-कभी हमारी अधीरता इस बात को भूल जाने

से आती है कि हम परमेश्वर नहीं हैं, और हम सृजित प्राणी हैं। हम जीवन में अपने समय को ऐसे नियंत्रित करना चाहते हैं, कि मानो यह हमारे ही हाथ में हो।

जब आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचते हैं, जो परमेश्वर के वादों के पूरा होने की प्रतीक्षा कर रहा हो, तो बाइबल का जो पहला उदाहरण आप बताएँगे, वह अब्राम है। उत्पत्ति 15 अध्याय में, यहोवा अनुग्रहपूर्वक अब्राम के साथ एक वाचा बाँधता है, और अन्य बातों के साथ-साथ, उससे यह वादा करता है कि उसके वंशज तारों से भी अधिक होंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसमें एक समस्या थी: उसकी पत्नी, सारै तो बाँझ थी... और बहुत अधिक बूढ़ी भी थी। एक-एक करके वर्ष बीतते गए, और अब्राम एवं सारै परमेश्वर का वादा पूरा होने की प्रतीक्षा करते रहे, और एक-एक करके वर्ष बीतते गए, और कोई बच्चा नहीं हुआ। यह रिश्तों में परमेश्वर के समय की परीक्षा का एक गहरा उदाहरण है।

और यह तब तक चलता रहा, जब तक कि सारै ने किसी भी तरीके से बच्चा पाने की एक योजना नहीं बना ली: "सारै ने अब्राम से कहा, "देख, यहोवा ने तो मेरी कोख बन्द कर रखी है, इसलिये मैं तुझ से विनती करती हूँ कि तू मेरी दासी के पास जा; सम्भव है कि मेरा घर उसके द्वारा बस जाए।" सारै की यह बात अब्राम ने मान ली" (उत्प. 16:2)। यहाँ सारै और अब्राम के द्वारा परमेश्वर के दिव्य अधिकार पर कब्जा कर लेना स्पष्ट दिखाई देता है; यहोवा ने उन्हें वह नहीं दिया, जिसे वे चाहते थे, इसलिए उन्होंने मामले को अपने हाथों में ले लिया। यह विश्वास करने के बजाय कि परमेश्वर का समय एकदम सही होता है, उन्होंने पाप करते हुए स्वयं को परमेश्वर से ऊपर मान लिया और उसे दिखा दिया कि उनके विचार से यह काम कैसे होना चाहिए था।

ध्यान दें कि इस मामले में जिस बात की इच्छा की गई थी—अर्थात् एक बच्चा—वह अपने आप में कोई बुरी इच्छा नहीं थी। परमेश्वर ने उन्हें बच्चा देने का वादा किया था। और यह देखना मुश्किल नहीं है कि कई वर्षों की प्रतीक्षा, निराशा और शर्मिंदगी ने इस जोड़े को कितना अधिक तोड़ दिया होगा। और फिर भी, उनके उदाहरण से यह साफ है कि अब्राम और सारै यह भूल गए थे कि वे परमेश्वर नहीं हैं। उन्हें लगा कि वे जगत के सृष्टिकर्ता से बेहतर कर सकते हैं। उन्होंने दिव्य समय के बजाय मानवीय तर्क के आधार पर काम किया। अधीरता के कारण यहोवा के प्रबन्ध पर उनका भरोसा इतना कमजोर हो गया कि सारै ने अपने पति से यहाँ तक कह दिया कि वह उसकी दासी के साथ सोए, कि शायद उससे उसे एक बच्चा मिल जाए।

क्या आपको कभी हैरानी हुई है कि आप परमेश्वर से बेहतर कर सकते हैं? इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप शायद यह बात जोर से न कहें। परन्तु पिछली बार जब आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी थी, उस समय की अपनी प्रार्थनाओं पर चिन्तन करें—क्या आप उनमें कोई घमण्ड भरी आलोचनात्मक सोच महसूस कर सकते हैं? क्या आप अक्सर दिन में यह स्वप्न देखते हैं कि यदि आपके पास परमेश्वर की दिव्य सामर्थ्य होती और आप परमेश्वर के समय को उससे भी बेहतर समझते, तो आप इस परिस्थिति को कैसे ठीक कर सकते थे?

परमेश्वर के समय पर भरोसा करने में हम जो संघर्ष करते हैं, उसका एक कारण यह है कि हम सृष्टिकर्ता और सृष्टि के बीच का अन्तर भूल जाते हैं। हम यह मान लेते हैं कि हमें सभी तथ्य पता हैं। हम गलती से यह सोच बैठते हैं कि यदि परमेश्वर

भी बातों को हमारे तरीके से देख पाता, तो वह निश्चित रूप से हमसे सहमत होता, और इस तरह हम अपने स्वयं के समय-निर्धारण को परमेश्वर के दिव्य समय के साथ भ्रम में डाल देते हैं।

परन्तु यह शैतान का झूठ है। हमारा पाप हमारे मन और हमारे निर्णय को परमेश्वर के समय को समझने के विषय में धुंधला कर देता है। हम यह भूल जाते हैं कि अक्सर ऐसी बहुत सी बातें होती हैं, जिन्हें हम नहीं जानते। हम भविष्य को नहीं जानते, और न ही हम सभी तथ्यों को जानते हैं। हो सकता है कि प्रभु ने किसी भले कारण से हमें कोई वरदान देने से रोक रखा हो, क्योंकि परमेश्वर का समय तो सही होता है, परन्तु अपने अहंकार में हम यह मान बैठते हैं कि परमेश्वर या तो अज्ञानी है, या अक्षम है, या फिर वह हमारे भले के विषय में समर्पित नहीं है।

यदि परमेश्वर और उसके समय पर भरोसा कर पाने की हमारी विफलता की नींव पाप ही है, तो हम क्या कर सकते हैं? हमें यह पूछना चाहिए: परमेश्वर के समय के बारे में बाइबल क्या कहती है? उस पर अपने भरोसे में हम कैसे बढ़ सकते हैं और परमेश्वर के समय पर भरोसा करना कैसे सीख सकते हैं?

बढ़ोतरी की कोई भी अपेक्षा इस बात से आरम्भ होनी चाहिए कि परमेश्वर कौन है।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. मेरे जीवन में उन समयों के ऐसे कौन से उदाहरण हैं, जब मुझे परमेश्वर के सही समय की प्रतीक्षा करने में संघर्ष करना पड़ा?
2. मैंने अपनी अधीरता को पाप मानने के बजाय, उसके लिए क्या-क्या बहाने बनाए हैं?
3. मैंने परमेश्वर के बारे में कौन-कौन सी झूठी बातों पर केवल इसलिए विश्वास किया है, क्योंकि मुझे लगा कि वह अपने समय पर काम नहीं कर रहा है?

2

एक ऐसा परमेश्वर जो हमारे भरोसे के योग्य है

पिछले खण्ड में, हमने विचार किया था कि हम परमेश्वर के समय पर भरोसा करने में क्यों विफल रहते हैं। हमने देखा कि परमेश्वर और उसके समय पर भरोसा करने में हमारा पाप ही सबसे बड़ी रुकावट है, और हमारा पहला कदम इस बात की एक नयी समझ से आरम्भ होना चाहिए कि परमेश्वर कौन है, जैसे उसने अपने वचन में स्वयं को प्रकट किया है।

यहाँ परमेश्वर के बारे में हमारी समझ के दो पहलू काम कर रहे हैं। पहला, यहाँ परमेश्वर के स्वभाव की वास्तविकता दिखाई देती है। उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक, परमेश्वर अपने अनुग्रह से अपने शानदार स्वभाव को दिखाकर और बताकर प्रकट करता है। कभी-कभी वह सीधे तौर पर अपने स्वभाव को प्रकट करता है, जैसे कि जब वह निर्गमन 34:5-7 में मूसा के सामने से होकर गुजरा, और तब हम प्रभु को वह बताते हुए सुनते हैं, जो उसके अनुसार हमें उसके बारे में जानना चाहिए—अर्थात् एक ऐसा अंश, जिसे अक्सर परमेश्वर के समय से जुड़ी आयतों के साथ-साथ बताया जाता है:

> तब यहोवा ने बादल में उतरकर उसके संग वहाँ खड़ा होकर यहोवा नाम का प्रचार किया। यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, “यहोवा, यहोवा, ईश्‍वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा; वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।”

और फिर पवित्रशास्त्र में ऐसी भी जगहें हैं, जहाँ, परमेश्वर अपने बारे में सीधे-सीधे बताने के बजाय, यह दिखाता है कि वह कैसा है। मैं मरकुस 5 अध्याय में यीशु की सामर्थी सेवकाई के बारे में सोचता हूँ। उस अध्याय में, हमें प्रभु की सामर्थ्य के बारे में सीधे-सीधे किए गए अधिक दावे देखने को नहीं मिलते; इसके बजाय, हम प्रभु यीशु की सामर्थ्य और अधिकार को देखते हैं, जो उन लोगों के प्रति उसकी कोमलता और दया के साथ-साथ प्रकट होते हैं, जो सहायता के लिए उसके पास आते हैं, और वह समय पर हस्तक्षेप करता है।

परमेश्वर के बारे में हमारी समझ का दूसरा पहलू, जिस पर हमें यहाँ विचार करना चाहिए, वह परमेश्वर के चरित्र का हमारा अपना अनुभव है। परमेश्वर के बारे में ईश-वैज्ञानिक सत्य को केवल बौद्धिक रूप से स्वीकार कर लेना ही पर्याप्त नहीं है; हमें यह भी सोचना है कि यह सत्य हमारे लिए क्या अर्थ रखता है और परमेश्वर के साथ हमारे रिश्तों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। परमेश्वर के समय को समझने के लिए यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अलग-अलग लोग एक ही सत्य पर अलग-

अलग तरीकों से प्रतिक्रिया देंगे। जिस बच्चे का पालन-पोषण एक ऐसे घर में हुआ हो, जहाँ उसके साथ दुर्व्यवहार हुआ हो, तो वह शायद अपने पिता के हाथ उठाने पर यह सोचकर पीछे हट जाए, कि उसे थप्पड़ पड़ने वाला है, परन्तु जिस बच्चे का पालन-पोषण एक प्रेम से भरे घर में हुआ हो, वह शायद अपने पिता के हाथ उठाने पर यह सोचकर आगे बढ़ जाए, कि उसे गले लगाया जाने वाला है।

सरल भाषा में कहें तो, इस प्रश्न का उत्तर देना ही पर्याप्त नहीं है कि "परमेश्वर कौन है?" हमें इस प्रश्न का उत्तर भी देना होगा कि "आपके लिए परमेश्वर कौन है?" परमेश्वर के बारे में हमारी अपनी समझ हमेशा इस बात से आनी चाहिए कि उसने स्पष्ट रूप से अपने वचन में स्वयं को कैसे प्रकट किया है। हमें यह स्वतंत्रता नहीं दी गई है कि हम अपनी स्वयं की अपेक्षाओं और इच्छाओं के आधार पर परमेश्वर को अपनी सोच से गढ़ लें या बदल डालें। साथ ही, हम कोई रोबोट भी नहीं हैं; हम ईश-वैज्ञानिक सत्यों पर केवल ठण्डे तर्क से ही प्रतिक्रिया नहीं देते। जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि हमारा ईश-विज्ञान हमारे जीवन जीने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है, तो परमेश्वर के बारे में हमारी समझ हमारे मन और हमारे हृदय दोनों से होकर गुजरती है।

हमें इस सत्य को भी समझना चाहिए कि परमेश्वर कौन है, और उसे अपने हृदय एवं जीवन में आत्मसात भी करना चाहिए। परमेश्वर के चरित्र की एक स्पष्ट समझ हमें धीरज धरकर परमेश्वर की योजनाओं के फलने-फूलने के लिए उसके निर्धारित समय की प्रतीक्षा करने में सक्षम करेगी। मुझे भरोसा है कि परमेश्वर के लोग नये आकाश और नयी पृथ्वी में युगों-युगों तक परमेश्वर के चरित्र की अथाह गहराइयों को खोजने और उसमें आनन्दित होने में अपना समय व्यतीत करेंगे। ऐसा कोई तरीका नहीं है, जिससे हम यहाँ उसके गौरवशाली व्यक्तित्व के साथ न्याय कर सकें। इस खण्ड में मेरा उद्देश्य आपके हृदय की समझ को इस विषय में फिर से बनाने, सुधारने या सुदृढ़ करने में आपकी सहायता करना है कि परमेश्वर कौन है। परमेश्वर के चरित्र के तीन पहलुओं अर्थात् उसके ज्ञान, उसकी सामर्थ्य और उसकी भलाई पर विचार करके हम ऐसा करेंगे। और हम आगे देखेंगे कि परमेश्वर के चरित्र के इन पहलुओं की सही समझ, उसके समय पर भरोसा करने में बढ़ने के लिए आवश्यक है।

परमेश्वर का ज्ञान

परमेश्वर की एक प्रमुख विशेषता उसका सर्वज्ञानी होना है, अर्थात् उसे समस्त बातों का पूर्ण ज्ञान है। परमेश्वर के ज्ञान की विशालता मन को चकित कर देती है; और इसके बारे में आप जितना अधिक सोचते हैं, यह उतना ही अधिक अद्भुत प्रतीत होता है।

चलिए, एक छोटी बात करते हैं। अपने पसन्दीदा फूल की कल्पना करें (मेरा पसन्दीदा फूल कंदपुष्प (tulip) है)। वह सुन्दर होता है न? परमेश्वर उस फूल के बारे में सब कुछ जानता है: उसकी क्या आवश्यकता है, वह कितने समय तक जीवित रहेगा, और वह कहाँ से आया है। अब उसकी पंखुड़ियों को पास से देखें। परमेश्वर जानता है कि वे पंखुड़ियाँ कैसे बनीं। वह जानता है कि कौन से पोषक तत्व किन रंगों में परिवर्तित हुए। और पास से देखें। परमेश्वर जानता है कि प्रकाश का हर कण पंखुड़ियों से टकराकर कैसे वापस लौटेगा और किसी व्यक्ति, या मधुमक्खी, या गाय की आँखों में कैद हो जाएगा; और वह यह ठीक-ठीक जानता है कि इस फूल को देखने वाले हर दर्शक पर इसका क्या प्रभाव होगा। क्या उस फूल को तोड़ा जाएगा, उसका परागण होगा, या उसे खा लिया जाएगा? परमेश्वर ही जानता है। पृथ्वी के हर खेत के हर फूल

की हर पंखुड़ी से टकराकर वापस लौटने वाले प्रकाश के हर कण का पथ परमेश्वर जानता है। परमेश्वर के जानने के लिए कोई भी बात इतनी छोटी नहीं है।

या चलिए, बड़ी बात करते हैं। अपने मन की आँखों से, कल्पना करें कि आप बाहर किसी तूफान में हैं। अब कल्पना करें कि वह तूफान एक चक्रवात है। चक्रवात इतने विशाल होते हैं कि उन्हें अन्तरिक्ष से भी देखा जा सकता है। यह तीव्र होते हैं, है न? अब एक ऐसे तूफान की कल्पना करें, जो न केवल अन्तरिक्ष से दिखाई देता हो, बल्कि हमारे पूरे ग्रह से भी कहीं अधिक विशाल हो। इस समय बृहस्पति ग्रह के उस लाल धब्बे में ठीक ऐसा ही हो रहा है, और वह एक ऐसा तूफान है, जिसका व्यास हमारी पृथ्वी से भी कहीं अधिक बड़ा है। कैरिबियाई क्षेत्र में चलने वाली हवा के हर झोंके से परमेश्वर उतना ही भली-भाँति परिचित है, जितना कि वह बृहस्पति या किसी ऐसे दूरदराज के ग्रह पर उठने वाले तूफानों से परिचित है, जिनके बारे में हमने कभी सुना भी नहीं है। परमेश्वर के जानने के लिए कोई भी बात इतनी बड़ी नहीं है। यह जगत के समय से जुड़ा कोई अस्पष्ट विचार नहीं है; बल्कि यह तो सृष्टिकर्ता का अपना निजी ज्ञान है।

यशायाह ने प्रभु यहोवा की ओर से इस अद्भुत आत्म-वर्णन को लिखा है: "...क्योंकि परमेश्‍वर मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्‍वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई..." (यशा. 46:9-10)। हर कहानी के शीर्षक पृष्ठ तक आपके पहुँचने से पहले ही परमेश्वर जान लेता है कि उस कहानी का अन्त कैसे होगा। उसके ज्ञान की सीमा से बाहर कुछ भी बात नहीं है। उससे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है।

परमेश्वर का सर्वज्ञानी होना हमें उसके समय पर भरोसा करने में किस तरह सहायता करता है? हमारी तरह, परमेश्वर कभी भी अज्ञानता के आधार पर कोई निर्णय नहीं लेता। शायद मैं किराने की दुकान पर यह जाने बिना चला जाऊँ कि हमारे पास अण्डे समाप्त हो गए हैं, और जब मैं नाश्ता बनाने लगूँ, तब मुझे पता चले कि मुझे अण्डे ले आने चाहिए थे। परमेश्वर हमारी तरह नहीं है। उसका हर निर्णय हर बात के बारे में उसकी पूरी जानकारी पर आधारित होता है। उसे और जानकारी इकट्ठा करने के लिए प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं होती। देने या रोकने का उसका हर निर्णय, सारी सम्भव जानकारी को ध्यान में रखकर ही किया जाता है। हम भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर का समय एकदम सही होता है, क्योंकि उस परिस्थिति के बारे में उसकी जानकारी हमारी जानकारी से कहीं अधिक होती है। अन्त में, परमेश्वर पर विश्वास करने में, उसके समय पर विश्वास करना भी शामिल है।

परमेश्वर की सामर्थ्य

मेरी पसन्दीदा एनिमेटेड फिल्मों में से एक *द इनक्रेडिबल्स (The Incredibles)* है, यह महानायक वाली फिल्मों के संसार पर एक मजेदार और हृदय को छू लेने वाली फिल्म है, जिसका संगीत माइकल जियाचिनो ने दिया है। इस फिल्म में, मिस्टर इनक्रेडिबल, वह महानायक जिसके पास बहुत अधिक शक्ति है, अपनी पत्नी से आँसू बहाते हुए कहता है कि वह उसे खोने के बारे में सोच भी नहीं सकता, क्योंकि "मैं इतना शक्तिशाली नहीं हूँ।" यह एक बेहतरीन फिल्म का एक बहुत ही प्यारा सीन है।

"मैं इतना शक्तिशाली नहीं हूँ।" ये ऐसे शब्द हैं, जो आप बाइबल के परमेश्वर के मुँह से कभी नहीं सुनेंगे। परमेश्वर केवल सर्वज्ञानी ही नहीं है, बल्कि वह सर्वसामर्थी, या असीम शक्तिशाली भी है। जिस तरह परमेश्वर के ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, उसी तरह अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए उसकी सामर्थ्य या उसकी क्षमता की भी कोई सीमा नहीं है।

पिछली बार ऐसा कब हुआ था, जब आप कुछ करना चाहते थे, परन्तु आपके पास उसे करने की सामर्थ्य ही नहीं थी? हाल ही में छुट्टियों के दौरान, मैं और मेरी पत्नी उस आश्रय-स्थल की व्यायामशाला में एक साथ कसरत कर रहे थे। मैं दण्ड-बैठक लगाकर अपनी कसरत समाप्त करने वाला था, और कुछ दण्ड-बैठक लगाने के बाद (मैं यह कभी नहीं बताऊँगा कि मैंने कितनी दण्ड-बैठक लगाई थीं), मेरे हाथ थक गए और मैं फर्श पर गिर पड़ा। यह मायने नहीं रखता कि उस दोहराव को पूरा करने की मेरी कितनी भी इच्छा क्यों न हो; मेरे बाजुओं की सारी सामर्थ्य समाप्त हो चुकी थी और वे बिलकुल पके हुए पास्ता की तरह ढीले पड़ गए थे।

परमेश्वर हमारी तरह नहीं हैं। वह थकता नहीं। परमेश्वर स्वयं से यह नहीं कहता, "मैं इसे करना तो चाहता हूँ, परन्तु पहले मुझे थोड़ी देर सोकर अपनी सामर्थ्य वापस पानी होगी।" परमेश्वर की सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं है। यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता इसे इस तरह कहता है: "हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़ी सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है! तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है" (यिर्म. 32:17)। प्रचण्ड सूर्य, अटल पर्वत और गरजते हुए महासागर, ये सभी परमेश्वर की सामर्थ्य का केवल एक छोटा सा अंश ही दर्शाते हैं।

परमेश्वर का सर्वसामर्थी होना आपके लिए क्यों मायने रखता है? क्योंकि परमेश्वर कभी भी सामर्थ्य की कमी से बाधित नहीं होता। उसके सामने ऐसी कोई परिस्थिति कभी नहीं आती, जिसमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह चाहे, कि काश वह सही काम कर पाता, यदि वह थोड़ा सा और शक्तिशाली होता। नहीं, परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। उसे बाँधा नहीं जा सकता। हम उसके समय पर भरोसा कर सकते हैं, क्योंकि हम यह जान सकते हैं कि जब परमेश्वर कार्य करने का निर्णय लेता है, तो उसके समय में उसकी इच्छा को पूरा करने से उसे कोई भी बात नहीं रोक सकती।

परमेश्वर की भलाई

मुझे लगता है कि अधिकांश मसीही, जो परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा में समय बिताते हैं, उसके ज्ञान या उसकी सामर्थ्य पर सन्देह नहीं करते। ये विशेषताएँ परमेश्वर के बारे में हमारी समझ के लिए इतनी बुनियादी हैं कि इन्हें अधिकांश रूप से मान ही लिया जाता है। नहीं, मेरा अनुमान है कि प्रतीक्षा के इन समयों में, परमेश्वर की भलाई के इस अन्तिम गुण की ही सबसे अधिक उपेक्षा की जाती है, इसे कम करके आंका जाता है, या इस पर सन्देह किया जाता होता है।

परमेश्वर की भलाई से मेरा क्या अर्थ है? यहाँ मेरा अर्थ परमेश्वर के उस वादे से है, जिसमें वह अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहते हुए अपने नाम की महिमा और उन लोगों के कल्याण के लिए, जिनसे वह प्रेम करता है, काम करेगा। अपने प्रावधान में, परमेश्वर जो कुछ भी करता है, उससे उसकी महिमा और हमारी भलाई ही सबसे अधिक होती है। वह अधिकार रखते हुए, अपने लोगों को आशीष देने की मंशा रखता है, और उन्हें वही देता है, जिसकी उन्हें आवश्यकता है, और उसी समय पर देता है, जब उन्हें उसकी आवश्यकता होती है—यह दिव्य समय का एक प्रमाण है।

प्रतीक्षा के समय में किसी व्यक्ति को परमेश्वर की भलाई के विषय में संघर्ष करते हुए देखना कोई कठिन बात नहीं है। आपका प्रियजन बीमार है। आप जानते हैं कि परमेश्वर उसे चंगा कर सकता है। और फिर भी वह ऐसा नहीं करता। और जल्दी ही, इससे परमेश्वर के सर्वज्ञानी होने या सर्वशक्तिमान होने पर प्रश्न नहीं उठता। इससे उसकी भलाई पर प्रश्न उठता है। कितनी ही बार टूटे हुए हृदयों से ये शब्द निकले हैं: "हे परमेश्वर, यदि तू भला है, तो तू ऐसा कैसे होने दे सकता है?"

एक पास्टर के तौर पर अपने समय में, मैंने अपनी कलीसिया के सदस्यों से कहा कि कुछ ऐसी आयतें हैं, जिन पर आप अपनी आत्मा को टिका सकते हैं—जो परमेश्वर के समय और चरित्र के बारे में बुनियादी आयतें हैं—और जो इतनी गहरी शानदार सच्चाई से भरी हुई हैं कि उन्हें कण्ठस्थ करना बहुत लाभकारी है। ऐसी ही एक आयत भजन 119 के लगभग बीच में, आयत 68 में मिलती है, जहाँ भजनकार लिखता है, "तू भला है और भला करता भी है; मुझे अपनी विधियाँ सिखा।"

पलक झपकाते ही आप इससे चूक जाएँगे। "तू भला है और भला करता भी है।" हिन्दी भाषा में ये आठ शब्द हैं, परन्तु मुझे दृढ़ विश्वास है कि ये आठ शब्द आपका जीवन बचा सकते हैं।

भजन 119 के पूरे अध्याय में, भजनकार परमेश्वर के वचन के महत्व पर, अक्सर आँसुओं के साथ मनन करता है। उसे वे समय याद आते हैं, जब उसे अपने ही पाप और मूर्खता के कारण दु:ख उठाना पड़ा था, और उसे अपने शत्रुओं के दिए हुए घाव भी याद आते हैं। और इन सब के बावजूद, भजन 119:68 आज भी सच है: "तू भला है और भला करता भी है।" उसकी सांसारिक परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी रही हों, भजनकार ने स्वयं को परमेश्वर की भलाई के सच्चे आधार से जोड़ रखा है।

हम परमेश्वर की भलाई पर भरोसा करने में संघर्ष क्यों करते हैं? क्योंकि हम भूल जाते हैं कि परमेश्वर हमारी तरह नहीं है। हम जानते हैं कि हम भरोसेमन्द नहीं हैं, क्योंकि हम अपने ही विचारों को सुनते हैं। यहाँ तक कि जब हम सही काम करते हैं, तब भी हम अपने हृदयों में चल रहे द्वंद्व और हिचकिचाहट को जानते हैं। हम उतने अच्छे नहीं हैं, जितना हम बनना चाहते हैं, फिर भी आत्मा की सहायता से, हम बढ़ रहे हैं। परमेश्वर की भलाई पर सन्देह करना आसान है, क्योंकि हम उसके साथ ऐसा बर्ताव करते हैं कि जैसे वह हममें से ही एक है। परन्तु वह हममें से एक नहीं है। वह बेहतर है। वह भला है।

क्योंकि परमेश्वर भला है, इसलिए हम उसके समय पर भरोसा कर सकते हैं। भले ही ऐसा लगे कि हमें टालमटोल में रखा जा रहा है, परन्तु क्योंकि परमेश्वर भला है, इसलिए हम यह भरोसा कर सकते हैं कि उसका समय एकदम सही है और उसकी योजनाएँ हमेशा हमारी भलाई के लिए होती हैं। इस बारे में एक पल के लिए सोचें। ऐसा कोई समय कभी नहीं आएगा, जब प्रभु अपने लोगों की भलाई को अपनी स्वयं की महिमा की वेदी पर बलिदान कर दे। और इसी तरह, ऐसा कोई समय कभी नहीं आएगा, जब वह अपनी स्वयं की महिमा को पाने में विफल रहे, क्योंकि ऐसा करना उसके लोगों की भलाई के विरुद्ध होगा। ये दोनों बातें परमेश्वर की भली योजनाओं में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, जो दिव्य समय की समझदारी को दिखाती हैं।

परमेश्वर सब कुछ जानता है, वह सर्वशक्तिमान है, और वह भला है। तो फिर, उस पर और उसके समय पर भरोसा करने का अर्थ क्या है? इसका आरम्भ इस दृढ़ विश्वास से होता है कि परमेश्वर पर विश्वास करने में ही उसके समय पर विश्वास करना शामिल है। इससे पहले कि हम यह सोचें कि हमारे अपने जीवन में यह कैसा दिखता है, हमें परमेश्वर के समय की

प्रतीक्षा करने के महत्व के बारे में एक और बात पर ध्यान करना होगा। हमें परमेश्वर के पुत्र, प्रभु यीशु मसीह के उदाहरण पर विचार करना होगा।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करते समय, इन विशेषताओं में से किसे याद रखना आपको सबसे कठिन लगता है?
2. पवित्रशास्त्र से आप और कौन से उदाहरण याद कर सकते हैं, जो परमेश्वर के ज्ञान, उसकी सामर्थ्य, या उसकी भलाई को दिखाते हों, और जो शायद परमेश्वर के समय पर आधारित वचन के रूप में सेवा करते हों?
3. आपने कैसे देखा है कि इन विशेषताओं को समझने में विफल रहना, परमेश्वर और उसके आत्मिक समय पर भरोसा करने की आपकी क्षमता पर कैसे प्रभाव डालता है?

3

यीशु की तरह भरोसा करना

अब तक, हमने इस बात पर ध्यान किया है कि हमारे पापों के कारण, कैसे हममें से हर किसी को भरोसे की कोई न कोई समस्या है। हमारे शरीरों के कारण, हम परमेश्वर पर वैसा भरोसा करने में विफल हो जाते हैं, जैसा हमें करना चाहिए। फिर हमने देखा कि कैसे हमारी इस भरोसे की समस्या की सबसे अच्छी औषधि परमेश्वर का एक नया और भरपूर दर्शन है, अर्थात् उस परमेश्वर का दर्शन जो सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान, और पूर्णत: भला है।

परन्तु परमेश्वर के समय पर भरोसा करने का अर्थ क्या है? धन्यवाद हो कि परमेश्वर ने हमें प्रभु यीशु मसीह के रूप में सबसे बेहतरीन उदाहरण दिया है, जो ईश्वर-मनुष्य था, और जो अब तक जीवित रहे मनुष्यों में सबसे अधिक पवित्र आत्मा से भरा हुआ था।

यीशु कौन है?

मेरा जन्म और पालन-पोषण मेम्फिस, टेनेसी में हुआ था, और एक जन्मजात मेम्फिस निवासी के तौर पर मैं आपको यह आश्वासन दे सकता हूँ कि किसी भी व्यक्ति के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक यह है कि वे बारबेक्यू के बारे में क्या सोचते हैं। स्पष्ट रूप से कहूँ तो, बारबेक्यू शब्द का उपयोग केवल ऐसे मांस के वर्णन के लिए किया जाना चाहिए, जिसे लम्बे समय तक धुएँ में पकाया गया हो। इसके लिए, आप सुअर, ब्रिस्केट, मुर्गा और बत्तख के मीट को भूनने के बारे सोच सकते हैं। बर्गर और हॉट डॉग्स बारबेक्यू की श्रेणी में नहीं आते। इस बात के लिए तो मैं मर भी जाऊँगा।

जब लोग मेम्फिस इलाके में आकर बसते हैं, तो मैं उन्हें चिता देता हूँ कि उन्हें यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लेना होगा कि उन्हें किस बारबेक्यू रेस्त्राँ के प्रति वफादार रहना है। यहाँ चुनने के लिए रेंडेज़वस, सेंट्रल, कॉर्कीज़, कमिसरी और ऐसी ही अनगिनत छोटी-छोटी बारबेक्यू की दुकानें हैं (वैसे मैं बता दूँ कि मुझे तो कैप्टन जॉन्स बहुत पसन्द है)। यदि आप मेम्फिस में किसी भी रास्ता चलते अनजान व्यक्ति से यह पूछेंगे कि इस शहर का सबसे बढ़िया बारबेक्यू कहाँ मिलता है, तो आपको सौ अलग-अलग उत्तर मिलेंगे।

मेरे विचार से यदि आप लोगों से यह पूछेंगे कि यीशु कौन है, तो आपको ठीक इसी तरह के अलग-अलग उत्तर मिलेंगे।

कुछ लोग यीशु को उत्तम गुरु कहते हैं, जबकि दूसरे लोग उसे एक क्रांतिकारी कहते हैं। कुछ समलैंगिक-विरोधी, और कुछ नायक कहते हैं। मेम्फिस में बारबेक्यू के विकल्पों की ही तरह, ऐसा लगता है कि यीशु की पहचान के बारे में लोकप्रिय विचारों की कोई सीमा नहीं है। हालाँकि, मेम्फिस के बारबेक्यू के विपरीत, यीशु के बारे में आपके विचार के अनन्त परिणाम मिलते हैं। हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि हम यीशु के क्या होने पर विश्वास करते हैं, क्योंकि जैसे यीशु ने परमेश्वर पर

भरोसा किया और जैसे वह परमेश्वर के समय को समझने हेतु हमारे लिए एक उदाहरण बना, इसका यीशु की पहचान से गहरा रिश्ता है।

पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि यीशु पृथ्वी पर रहने वाले हर एक व्यक्ति से पूरी तरह से अलग है। यीशु कोई साधारण मनुष्य नहीं है; वह स्वयं परमेश्वर है, वह परमेश्वर पुत्र है, वह त्रिएकत्व के दूसरा व्यक्ति है, वह देहधारी सनातन वचन है (यूहन्ना 1:1-14)। मानवीय और ईश्वरीय, दोनों स्वभावों को धारण करते हुए, यीशु पृथ्वी पर अपने जीवनकाल में पूरी तरह से पिता का आज्ञाकारी रहा, और एक बार भी विफल नहीं हुआ।

यीशु हमारा उदाहरण इसलिए बन सकता है, क्योंकि उसका जीवन पूरी तरह से भलाई से भरा हुआ था। हमारे विपरीत, जिनके जीवन में अच्छे और बुरे दिन आते हैं, यीशु का कोई भी दिन कभी खराब नहीं गया। पवित्रशास्त्र के पन्नों में लिखी उसकी हर एक बातचीत, संवाद और कार्य, इस बात का प्रमाण है कि पूर्ण आज्ञाकारिता कैसी दिखती है। क्या आप जानना चाहते हैं कि संसार की खोई हुई दशा पर शोक करना कैसा होता है? तो यीशु की ओर देखें। क्या आप जानना चाहते हैं कि कष्टों के बीच भी परमेश्वर की आज्ञा मानना कैसा होता है? तो यीशु की ओर देखें। क्या आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर के समय पर भरोसा करना कैसा होता है? तो यीशु की ओर देखें।

यीशु ने परमेश्वर पर कैसे भरोसा किया?

यदि यीशु न केवल हमारा प्रभु, बल्कि हमारा एक बड़ा उदाहरण भी है, तो परमेश्वर के समय पर भरोसा करने में सहायता पाने के लिए हम उसके जीवन में कहाँ देख सकते हैं?

सबसे पहले, हम यह देख सकते हैं कि यीशु का पूरा जीवन अपने पिता से प्रेम करने और उसकी सेवा करने के लिए समर्पित था। हम यीशु के जन्म के बाद उसके जीवन की सबसे आरम्भिक घटना से आरम्भ करते हैं: जो लूका के द्वारा, मन्दिर में एक बालक के रूप में यीशु की घटना है (लूका 2:41-52)। यहाँ हम हमारे प्रभु की चिन्तित माँ मरियम को देखते हैं, जो यरूशलेम छोड़ने के बाद अपने पहिलौठे पुत्र को बड़ी व्यग्रता से खोज रही थी। अन्त में उसे वह मन्दिर में मिला, जहाँ वह शिक्षकों के साथ गहन चर्चा में मग्न था। अपने माता-पिता के साथ इस तरह से व्यवहार करने के लिए मरियम ने अपने पुत्र को डाँटा, जिस पर यीशु ने उत्तर दिया, "तुम मुझे क्यों ढूँढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है?" (लूका 2:49)

अपने आरम्भिक वर्षों से ही, यीशु अपने स्वर्गीय पिता के बारे में सीखने के लिए समर्पित था। लूका अपने सुसमाचार के इस खण्ड को इस तरह समाप्त करता है: "और यीशु बुद्धि और डील–डौल में, और परमेश्‍वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया" (लूका 2:52)। जबकि हमें उस देहधारी के रहस्य के लिए जगह छोड़नी चाहिए, परन्तु पवित्रशास्त्र से यह साफ है कि यीशु विश्वासयोग्यता के साथ अपने पिता की सेवा करने के लिए समर्पित था। वह जानता था कि अपने पिता के काम में शामिल होना ही उसके लिए सबसे बड़ा आनन्द था। और वह जहाँ था, वहाँ सन्तुष्ट न रहने के लिए वह समर्पित था; और समय के साथ अपने विकास में ईश्वरीय समय को स्वीकार करते हुए यीशु बढ़ता गया।

हे मेरे मित्र, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप उस देहधारी के अद्भुत काम से कभी ऊब न जाओ। यद्यपि, यीशु पूरी तरह से परमेश्वर था, तौभी वह अपनी मानवीयता में "बुद्धि और डील–डौल में, और परमेश्‍वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" यहाँ तक कि यीशु का जन्म इस रीति से हुआ था कि उसे बढ़ने और सीखने की आवश्यकता नहीं थी। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि अपने ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार, यीशु पूरी जानकारी और अधिकार के साथ "सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से सम्भालता है" (इब्रा. 1:3)। परन्तु यहाँ हम देखते हैं कि यीशु अपने स्वर्गीय पिता और उसके सही समय के बारे में अपनी जानकारी और भरोसे में बढ़ने की प्रतिबद्धता का एक उदाहरण पेश करता है।

और यीशु केवल परमेश्वर के बारे में स्वयं से-ही-प्रमाणित की जाने वाली सच्चाइयों को सीखकर ही नहीं बढ़ा। इब्रानियों को लिखी गई पत्री का लेखक हमें बताता है कि "पुत्र होने पर भी उसने [यीशु ने] दु:ख उठा–उठाकर आज्ञा माननी सीखी" (इब्रा. 5:8)। आज्ञा मानने के कुछ ऐसे पहलू थे, जिन्हें प्रभु यीशु केवल स्वयं को दीन बनाकर और इस पतित संसार में दु:ख उठाकर ही सीख सकता था। स्वयं को पूरी तरह से पिता के अधीन करके, यीशु ने अपने दु:ख का भी उपयोग अपनी आज्ञाकारिता में बढ़ने के लिए स्वयं को तैयार करने में किया, और उस उद्धारकर्ता के रूप में जिसकी हमें आवश्यकता थी, स्वयं को और अधिक योग्य बनाया।

यीशु यह दिखाकर हमारे लिए एक उदाहरण का काम करता है कि दु:ख के समय में भी परमेश्वर को जानना और प्रेम करना कैसा होता है। वह हमें यह भी दिखाता है कि परमेश्वर के समय पर भरोसा करने का क्या अर्थ है।

यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में, आत्मा उसे जंगल में ले गया, ताकि शैतान उसकी परीक्षा करे। परमेश्वर के पुत्र पर तीन बार आक्रमण करते हुए, शैतान ने बार-बार यीशु को इस जहरीले ताने के साथ चुनौती दी: "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है," जो सीधे तौर पर यीशु के बपतिस्मा के समय पिता की घोषणा को चुनौती दे रहा था (मत्ती 3:17)। मत्ती के वृत्तांत में, शैतान यीशु को संसार के सारे राज्य देने की पेशकश करके अपने आक्रमण को चरम पर पहुँचाता है, और कहता है, "यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा" (मत्ती 4:9)।

यहाँ शैतान क्या करने का प्रयास कर रहा है? मसीह और परमेश्वर के पुत्र के रूप में, यीशु से पहले ही यह वादा किया गया था कि पृथ्वी के राज्य उसे विरासत में मिलेंगे (भज. 2:8)। शैतान यीशु को कोई नयी वस्तु नहीं दे रहा था। नहीं, इसके बजाय, शैतान यीशु को एक ऐसा तरीका सुझा रहा था, जिससे कि आज्ञाकारी होकर कष्ट सहे बिना ही वह अपना प्रतिफल पा सके। शैतान ने यीशु को बिना क्रूस के ही मुकुट देने की पेशकश की। यह परमेश्वर की योजना और समय को ठुकरा देना था।

तो फिर, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि मत्ती 16 अध्याय में यीशु पतरस को इतनी कठोरता से उत्तर क्यों देता है। यीशु अपने शिष्यों से कहता है कि उन्हें दु:ख उठाना पड़ेगा और वे मर जाएँगे, और पतरस यीशु को एक तरफ ले जाकर डाँटता है। यीशु उत्तर देता है, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो!" (मत्ती 16:23)। इतनी कठोर भाषा का उपयोग क्यों किया गया? क्योंकि अपने मित्र के शब्दों के पीछे, यीशु को शत्रु की वही फुसफुसाहट सुनाई देती है—जो आज्ञा मानने के कठिन रास्ते से बचने का एक प्रस्ताव है। शैतान के प्रयासों को यीशु का सफलतापूर्वक ठुकराना, परमेश्वर के समय पर भरोसा करने की एक समर्पण था, जबकि गहन परीक्षा सामने थी।

अन्त में, यीशु न केवल दु:ख और परीक्षा के समय में भी पिता पर भरोसे में बढ़ने का हमारे लिए एक उदाहरण है, बल्कि वह हमें यह भी दिखाता है कि परमेश्वर के चरित्र और उसके वादों पर आशा रखना कैसा दिखता है।

गतसमनी के वाटिका में, अपनी मृत्यु से बस कुछ ही घण्टे पहले, प्रभु यीशु हमें दिखाता है कि जब परिस्थितियाँ अपने सबसे अंधकारमय समय में हों, तब एक विश्वासयोग्य मानवीय जीवन कैसा दिखता है। हमारा प्रिय उद्धारकर्ता पिता से तीन बार पूछता है कि क्या दु:ख का यह कटोरा उससे टल सकता है, और तीन बार यीशु स्वयं को पिता की इच्छा के प्रति समर्पित कर देता है (मत्ती 26:44)। यहाँ विश्वासघात, यातना, मृत्यु, और पिता से अलग होने का सीधे-सीधे सामना करते हुए, यीशु पिता पर अपने भरोसे के सहारे स्वयं को यह जानते हुए छोड़ देता है कि सब कुछ उसके समय पर पूरा होगा। यहाँ, इस अन्तिम और सबसे महत्वपूर्ण पल में, यीशु पिता की इच्छा पर भरोसा करने के प्रति स्वयं को समर्पित करता है, क्योंकि वह जानता है कि पिता की इच्छा सही है, चाहे इसके लिए कोई भी व्यक्तिगत् कीमत चुकानी पड़े।

यीशु को ऐसी आज्ञाकारिता के लिए कौन सी बात विवश कर सकती थी? पवित्रशास्त्र हमें यीशु की ओर देखने को कहता है, "और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दु:ख सहा..." (इब्रा. 12:2)। यीशु क्रूस पर इसलिए गया, क्योंकि आज्ञाकारिता के दूसरी तरफ आनन्द उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह पिता और पवित्र आत्मा के साथ संगति का आनन्द था। यह "शाबाश" सुनने का आनन्द था। यह अपनी दुल्हिन, अर्थात् कलीसिया को बचाने का आनन्द था। संक्षेप में कहें तो यीशु ने इसलिए आज्ञा मानी, क्योंकि उसे विश्वास था कि परमेश्वर के वादे सच्चे हैं और पिता उसकी आज्ञाकारिता का प्रतिफल देने में कभी विफल नहीं होगा, जैसा उसने वादा किया था। यह परमेश्वर के सही समय की प्रतीक्षा करने का सबसे बेहतरीन उदाहरण है।

यीशु का भरोसा उसे कहाँ ले गया?

मुझे डर है कि कुछ लोग इस मार्गदर्शिका को पढ़कर गलती से यह मान लेंगे कि परमेश्वर के समय के आगे झुकने से उनके जीवन में परमेश्वर की आशीषें खुल जाएँगी, कि मानो आज्ञाकारिता अपने आप और हमेशा तुरन्त भौतिक आशीष लेकर आती है। परमेश्वर के समय के बारे में बाइबल ऐसा कुछ नहीं कहती। सुख-समृद्धि के सुसमाचार वाले झूठे शिक्षक, विश्वासयोग्यता या आर्थिक दान के बदले स्वास्थ्य या धन-सम्पत्ति का वादा करते हुए हर दिन ऐसे ही झूठ बोलते हैं।

इससे पहले कि हम अपने अन्तिम खण्ड की ओर बढ़ें, यह महत्वपूर्ण है कि हम इस बात पर ध्यान दें कि परमेश्वर के समय पर यीशु के भरोसे ने उसे कहाँ पहुँचाया। आप कह सकते हैं कि आप परमेश्वर के समय पर अपने भरोसे को बढ़ाना चाहते हैं, परन्तु परमेश्वर और उसके समय पर जीवन भर भरोसा करने के प्रति समर्पित होने से पहले, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप यीशु के उदाहरण को एक अन्य दृष्टिकोण से देखें।

जैसा कि हमने पहले ही ध्यान दिया है, यीशु के लिए आज्ञाकारिता का अर्थ परमेश्वर की योजना और उसके समय के अधीन होना, अर्थात् एक कठिन जीवन जीना था। यीशु के पास सिर धरने की भी जगह नहीं थी, और उसे लगातार चुनौतियों का सामना करना पड़ा और उसे गलत समझा गया। उसके सबसे करीबी शिष्यों में से एक ने उसे धोखा दिया, और जब बाकी

शिष्यों को यीशु के साथ खड़े होने का अवसर मिला, जैसा उन्होंने वादा किया था, तो उन सब ने भी उसे छोड़ दिया। उस पर एक दिखावटी मुकदमा चलाया गया, उसे पीटा गया, अपमानित किया गया, और क्रूस पर चढ़ा दिया गया।

जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया (प्रेरि. 2:23)।

जब हम यीशु के उदाहरण पर ध्यान देते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर के समय पर भरोसा करने का अर्थ है कि हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा के आगे स्वयं को समर्पित कर दें, भले ही इसका अर्थ कुछ भी हो। हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है, इस बारे में परमेश्वर की इच्छा पर हमें अन्तिम निर्णय का अधिकार नहीं मिलता। यदि आप यीशु का अनुसरण करने का वादा केवल तब तक करते हैं, जब तक आपको सही गाड़ी, सही जीवनसाथी, और बच्चों की सही संख्या के साथ सही मोहल्ले में सही घर मिलता रहता है, तो मैं आपसे कहना चाहूँगा कि आप असल में परमेश्वर और उसके समय पर भरोसा करना नहीं चाहते हैं।

अब, कौन जाने? हो सकता है कि यह प्रभु की ही इच्छा हो कि आपको वह मिले, जो आप चाहें, और तभी मिले, जब आप चाहें, अर्थात् आप अपनी दृष्टि में सही समय का आनन्द लें। परन्तु मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ—क्या होगा यदि ऐसा न हो? क्या होगा यदि उसकी इच्छा यह हो कि आप प्रतीक्षा करें... और प्रतीक्षा करें... और प्रतीक्षा करें? क्या तब भी आप प्रभु पर भरोसा करना चाहेंगे?

प्रभु यीशु के उदाहरण के बारे में एक और बात है, जिसे मैं चाहता हूँ कि हम देखें, और वह यह है कि दु:ख की दूसरी तरफ क्या है। आप देखें कि यीशु के जीवन में, जैसे पवित्रशास्त्र में अन्य जगहों पर है, हमें एक क्रम दिखाई देता है: पहले दु:ख, और फिर महिमा। बाइबल के संदर्भ में धीरज और समय पर चर्चा करते हुए यह एक मुख्य विषय है।

पिता के समय पर यीशु के भरोसे ने उसे कहाँ पहुँचाया? इसने उसे क्रूस तक और कब्र तक पहुँचाया। परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं होती। पिता के समय पर यीशु के भरोसे ने उसे पुनरुत्थान के जीवन तक भी पहुँचाया, क्योंकि परमेश्वर "अपने पवित्र भक्त को सड़ने नहीं देगा" (भज. 16:10)। जब हम पिता के समय पर भरोसा करते हैं, तो हमें इस संसार के दु:खों की सम्भावना के बारे में पूरी तरह से सचेत रहना चाहिए। वैसे भी, यह एक युद्धरत् संसार है। भले ही हम यह मानते हैं कि परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करने में हमें दु:ख उठाना पड़ सकता है, परन्तु हमें यह भी देखना चाहिए कि यदि हम मसीह में हैं, तो यह दु:ख हमेशा के लिए नहीं रहेगा। यह दु:ख, एक दिन महिमा में बदल जाएगा।

हे प्रिय मित्र, हममें से हर किसी को स्वयं से यह पूछना चाहिए कि क्या हम परमेश्वर और उसके समय पर भरोसा करने के लिए तैयार हैं? और जैसा कि हम अपने अन्तिम खण्ड में देखेंगे, यह कोई एक बार लिया जाने वाला निर्णय नहीं होगा। हमें बार-बार उस पर भरोसा करने के लिए सहमत रहना होगा। परन्तु यीशु का महिमामय उदाहरण हमें याद दिलाता है कि प्रतीक्षा करते समय चाहे हम घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलें, परन्तु यदि हम मसीह के हैं, तो यह बात पक्की है कि हम सुरक्षित रूप से दूसरी तरफ वाली हरी हरी चराइयों तक पहुँच जाएँगे।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. जब आप परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करने के बारे में सोचते हैं, तो यीशु के अनुभवों के कौन-से हिस्से आपके लिए सबसे अधिक सहायक होते हैं?
2. आपको प्रभु के समय पर भरोसा करने में सबसे अधिक चुनौती कहाँ मिलती है? यीशु के उदाहरण पर विचार करना आपको विश्वास के साथ प्रतीक्षा करने और यह मानने में कैसे सहायता कर सकता है कि परमेश्वर का समय एकदम सही होता है?
3. क्या आप स्वयं को आज के दु:खों या आने वाली महिमा पर चिन्तन करते हुए पाते हैं? आप अपने चिन्तनों को पवित्रशास्त्र एवं दिव्य समय के और निकट लाने के लिए किस तरह व्यवस्थित कर सकते हैं?

4

भरोसे में कैसे बढ़ें

अब तक, हमने भरोसे से जुड़ी उस समस्या पर ध्यान दिया है, जिसने पतन के बाद जन्मे हर मनुष्य को परेशान कर रखा है। फिर हमने इस बारे में विचार किया कि कैसे परमेश्वर की सही समझ ही उस पर और उसके सही समय पर भरोसा करने में विफल रहने की सबसे बेहतरीन औषधि है, और हमने परमेश्वर के समय पर भरोसा करने के पूर्व-प्रतिष्ठित उदाहरण के रूप में यीशु मसीह की पड़ताल की। अब इस अन्तिम खण्ड में, हम परमेश्वर और उसके समय पर अपने भरोसे में बढ़ने के लिए कुछ व्यावहारिक कदमों पर ध्यान देंगे।

इस मार्गदर्शिका में यह खण्ड सबसे पहले क्यों नहीं रखा गया? क्योंकि परमेश्वर पर भरोसा करने में हमारा विफल रहना, मौलिक रूप से आत्मिक समय की समस्या है। पहले अपने हृदय पर काम किए बिना, सीधे इस बात के व्यावहारिक सुझावों पर जाना कि परमेश्वर के समय पर कैसे भरोसा करें, सड़े हुए सेब पर रंग करने जैसा है। आपको शायद कुछ समय के लिए सफलता मिल जाए, परन्तु वह जल्दी ही समाप्त हो जाएगी। इस भाग में दिए गए सभी सुझाव पिछले तीन खण्डों को ध्यान में रखकर दिए गए हैं।

हम परमेश्वर और उसके समय पर अपने भरोसे में कैसे बढ़ सकते हैं?

प्रार्थना में परमेश्वर पर भरोसा करें

आपके बारे में मुझे नहीं पता, परन्तु मैं एक बहुत ही हठीला व्यक्ति हूँ। इससे मेरा अर्थ यह नहीं है कि आप मुझे यह नहीं समझा सकते कि मैं गलत हूँ (यह बात कितनी सही है, यह जानने के लिए मेरी पत्नी से पूछें)। मेरा अर्थ यह है कि मेरा शरीर हमेशा मुझे यह समझाने का प्रयास करता रहता है कि जो बदलाव मैं अपने जीवन में देखना चाहता हूँ, उसे लाने के लिए मुझे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है, या मैं अपने जीवन के समय को स्वयं ही सम्भाल सकता हूँ।

अपनी प्रार्थनाओं को लिखने का एक लाभ यह है कि आप अपनी प्रार्थनाओं में एक क्रम को देख पाते हैं और यह एक ऐसी आदत है, जिसकी मैं सलाह देता हूँ। और कई वर्षों तक अपनी प्रार्थनाओं को लिखने के बाद, मैं आपको बता सकता हूँ कि अपनी आत्मिक बढ़ोतरी के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा करने में विफल रहना मेरे सबसे अधिक अंगीकार किए गए पापों में से एक यह है। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं अपनी दृढ़ इच्छा से स्वयं को भक्तिमय बना सकता हूँ। मैं इतना मूर्ख भी हो सकता हूँ!

यदि आप परमेश्वर और उसके समय पर अपने भरोसे में बढ़ना चाहते हैं, तो आपको प्रार्थना से आरम्भ करना होगा। आप इसी समय आरम्भ कर सकते हैं। एक पल के लिए रुकें और प्रभु से यह प्रार्थना करें कि परमेश्वर के समय पर और अधिक भरोसा करने में सहायता के लिए वह आपके हृदय में काम करना आरम्भ करे।

हमें किस बात के लिए प्रार्थना करनी चाहिए? यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं:

- परमेश्वर पर भरोसा करने की अपनी पिछली विफलताओं का अंगीकार करें। उन झूठों का अंगीकार करें, जिन्होंने आपके अविश्वास को प्रेरित किया, जैसे कि परमेश्वर की भलाई पर भरोसा करने में विफल रहना, या परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करते समय स्वयं के महत्व को आवश्यकता से अधिक आँकना।
- आपकी इच्छा को अपनी इच्छा के साथ मिलाने के लिए प्रभु से प्रार्थना करें। उसे बताएँ कि आप उसके दिव्य समय पर भरोसा करना चाहते हैं, जिसमें उन बातों की इच्छा करना भी शामिल है, जो वह चाहता है। यदि राजा के हृदय को प्रभु अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी तरफ मोड़ सकता है (नीति. 21:1), तो निश्चय ही वह आपके हृदय को भी मोड़ सकता है।
- परमेश्वर से विशेष रूप से आपकी स्थानीय कलीसिया के माध्यम से, आपके जीवन में ऐसे मसीही भाई-बहनों को लाने के लिए प्रार्थना करें, जो आपको जवाबदेह ठहरा सकें और जो प्रभु पर भरोसा करने में आपकी सहायता कर सकें। रिश्तों में परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करना बहुत महत्वपूर्ण है।
- प्रभु पर भरोसा बनाए रखने की सामर्थ्य के लिए अपनी दैनिक आवश्यकता का अंगीकार करें। प्रभु ने एक कारण से इस्राएलियों को जंगल में हर दिन मन्ना दिया था—और यह समय पर की गई सहायता थी—और यीशु ने हमें हर दिन की रोटी के लिए प्रार्थना करना सिखाया: इससे हमें याद दिलाया जाता है कि हम उस सामर्थ्य के लिए जो केवल वही दे सकता है, निरन्तर प्रभु पर ही निर्भर रहते हैं।

मुझे निश्चय है कि प्रार्थना करने के लिए और भी कई बढ़िया बातें होंगी, परन्तु आपको यहाँ से आरम्भ करना चाहिए। पौलुस 1 थिस्स. 5:17 में लिखता है, "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।" भरोसा करने वाला मसीही वह है, जो प्रभु पर निर्भर रहता है और प्रार्थना के माध्यम से नियमित रूप से और ईमानदारी से उससे बातचीत करता है, और वह यह जानता है कि परमेश्वर पर विश्वास करने में उसके समय पर विश्वास करना भी शामिल है।

परमेश्वर के वचन का आनन्द लें

एक पास्टर के तौर पर, अपनी मण्डली के लिए मेरी सबसे बड़ी अभिलाषा यह है कि हम परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी इच्छा में बढ़ें और उसमें आनन्द मनाएँ। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हमें परमेश्वर के वचन की बेहतर समझ हो, तो हमारे कई व्यक्तिगत् और सामूहिक संघर्षों में हमें सहायता मिलेगी, जिनमें परमेश्वर के समय को समझना भी शामिल है।

बाइबल संसार की किसी भी दूसरी पुस्तक से बिलकुल अलग है। केवल पवित्रशास्त्र में ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर के ऐसे वचन मिलते हैं, जिनमें कोई गलती नहीं है और जो कभी गलत नहीं हो सकते। क्या आप कभी परमेश्वर को बोलते हुए सुनना चाहते है? क्या आपको कभी हैरानी हुई है कि किसी विशेष परिस्थिति में परमेश्वर के समय के बारे में बाइबल क्या कहती है? आपको हैरान होने की आवश्यकता नहीं है! आपको बस अपनी बाइबल अलमारी से निकालकर पढ़नी है।

जब आप बाइबल खोलते हैं, तो आपके मन में कौन से विचार आते हैं? क्या आप पहले से ही यह योजना बना रहे हैं कि इसके बाद आपको क्या करना है? क्या आपको जानी-पहचानी कहानियाँ या उलझाने वाले खण्ड पढ़ने से घबराहट होती है? तो हे मेरे मित्र, उस वरदान के बारे में सोचें, जो आपके हाथों में है। जिस परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, जो सारी सृष्टि का पवित्र, त्रिएक और महाप्रतापी राजा है, वह चुप नहीं बैठा है। उसने बात की है और पवित्रशास्त्र में स्वयं को प्रकट किया है।

अपेक्षा रखते हुए परमेश्वर के वचन के पास आएँ। परमेश्वर के वचन के खजाने की खुदाई करें। पवित्रशास्त्र का कोई अंश पढ़ना, मिट्टी खोदने जैसा है। हो सकता है कि आपको ऊपर ही कोई अनमोल रत्न मिल जाए। प्रभु की स्तुति हो! परन्तु यदि आप अपने बाइबल पठन से और भी अधिक पाना चाहते हैं, तो खोज करते रहें। केवल ऊपरी बातों से ही सन्तुष्ट न हों। प्रार्थना करें। प्रभु से माँगें कि आप जो पढ़ रहे हैं, उसे समझने में आपकी सहायता करे, और धीरज तथा परमेश्वर के समय के बारे में बाइबल की कोई ऐसी आयत ढूँढ़ें, जो आपके हृदय से बात करे। उस पाठ के विषय में प्रश्न पूछो। थोड़ा रुककर उसे फिर से पढ़ो।

यदि आप परमेश्वर और उसके समय पर अपने भरोसे में और बढ़ने की इच्छा रखते हैं, तो मैं आपको प्रोत्साहित करूँगा कि आप किसी सहायक पठ्न योजना की खोज करें और उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक, पूरी बाइबल पढ़ने के लिए समर्पित हो जाएँ। जब भी आप पवित्रशास्त्र खोलें, तो प्रार्थना करके प्रभु से माँगें कि वह आपकी इस बात को देखने में सहायता करे कि आप इस तरह से कैसे आगे बढ़ सकते हैं। जैसे-जैसे आप पढ़ते जाएँगे, तो मुझे भरोसा है कि आपको परमेश्वर के समय के बारे में आयतें मिलेंगीं, तथा ऐसे लोगों और जातियों के एक के बाद एक कई उदाहरण मिलेंगे, जो प्रभु पर अपने भरोसे में सफल और विफल दोनों हुए। उदाहरण के तौर पर:

- सारै जैसी स्त्रियाँ, जो सन्तान के वरदान के लिए तरसती थीं और परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करने में संघर्ष करती थीं
- यूसुफ, जिसने परमेश्वर की योजना और समय पर भरोसा रखते हुए मिस्र में ऊँचा पद पाने से पहले जेल में वर्षों तक प्रतीक्षा की
- राजा शाऊल, जो परमेश्वर के दिव्य समय की अनदेखी करके, युद्ध से पहले शमूएल के आने की प्रतीक्षा करने में विफल रहा
- पौलुस, जिसे परमेश्वर के सुसमाचार को फैलाने के लिए उसके समय पर भरोसा करना पड़ा

पवित्रशास्त्र के पन्नों में ध्यान देने के लिए बहुत सारी महिमा है, और मैं जानता हूँ कि परमेश्वर की यह इच्छा है कि आप भक्ति में बढ़ें, जिसमें उस पर आपका भरोसा भी शामिल है। मैं यह कैसे जानता हूँ? क्योंकि वह अपने वचन में ऐसा ही कहता है: "क्योंकि परमेश्‍वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो" (1 थिस्स. 4:3)।

प्रतीक्षा को व्यर्थ न करें

अन्त में, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप प्रभु की प्रतीक्षा करने में बिताए गए समय को व्यर्थ न जाने दें। मैं नहीं जानता कि आप इस समय पर किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और मैं तो इतना ही जानता हूँ कि प्रतीक्षा का हर दौर एक जैसा

नहीं होता। फिर भी, परमेश्वर के समय को समझने के लिए यही आवश्यक है कि आप प्रतीक्षा करते हुए भी, इस दौर में प्रभु को खोजने में लगन से लगे रहें।

जैसे हमने पहले यीशु के उदाहरण के साथ चर्चा की थी, वैसे ही कुछ प्रकार का ज्ञान ऐसा होता है, जो आपको केवल अनुभव से ही मिलता है। कोई कुर्सी आपका वजन उठा सकती है या नहीं, यह आप तब तक नहीं जान सकते, जब तक कि आप उस पर बैठकर अपना पूरा वजन उस पर न डाल दें। प्रभु की दया और देखभाल और प्रावधान के कुछ ऐसे पहलू हैं, जिनका अनुभव आप केवल प्रतीक्षा के समय में ही कर पाएँगे। कई बार ऐसे समय आ सकते हैं, जब आपको लगे कि आप जिस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह आपको मिल जाए, इसके बजाय कि परमेश्वर और उसके सही समय की पूरी तस्वीर समझ में आए। मेरा भरोसा करें, मैं भी इस दौर से होकर गुजर चुका हूँ। परन्तु अन्त में, हम इस समझ पर वापस आते हैं कि परमेश्वर कौन है। यदि वह सच में सब कुछ जानता है, यदि वह सच में सक्षम है, और यदि वह सच में भला है, तो प्रतीक्षा के दौर में भी हम उस पर भरोसा कर सकते हैं।

हम प्रतीक्षा के इस समय का सदुपयोग कैसे कर सकते हैं? यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

- कलीसिया के अन्य सदस्यों के साथ अपनी परिस्थिति के बारे में बात करने के अवसरों के लिए प्रार्थना करें। वे आपका बोझ उठाने में आपकी सहायता कर सकते हैं, और शायद आपका उदाहरण देखकर उन्हें प्रोत्साहन मिले। रिश्तों में परमेश्वर के समय का यह एक बहुत ही सुन्दर पहलू है।
- ऐसे तरीके खोजें, जिनसे प्रभु आपको उस पर और अधिक निर्भरता में बढ़ाने के लिए प्रतीक्षा के इस दौर का उपयोग कर सकता है, और यह साबित करें कि परमेश्वर पर विश्वास करने में, उसके समय पर विश्वास करना भी शामिल है।
- ध्यान दें कि जब आप उसके समय की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, तो कैसे प्रभु आपको दूसरों को सुसमाचार सुनाने या उसकी महिमा करने के कौन-कौन से अवसर उपलब्ध करवा सकता है। यदि आप किसी बीमारी के ठीक होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो चिकित्सक की दुकान में आप नियमित रूप से किन लोगों के सम्पर्क में आते हैं? यदि आप कोई नौकरी खोज रहे हैं, तो अभाव के इस दौर में भी आप सन्तोष के सुसमाचार-रूपी फल को कैसे प्रदर्शित कर सकते हैं?

जब मैं यह मार्गदर्शिका लिख रहा था, तब मेरी पत्नी और मैंने छह वर्षों तक सन्तान के वरदान के लिए प्रार्थना की थी, और उन छह वर्षों तक, प्रभु ने वह वरदान हमसे दूर रखा। उसी समय में, एक आयत जिसे हमने थामे रखा, वह भजन संहिता 84:11 थी: "क्योंकि यहोवा परमेश्‍वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं, उनसे वह कोई अच्छी वस्तु रख न छोड़ेगा।" यह परमेश्वर के समय के बारे में हमारे लिए एक मुख्य आधार वचन बन गया है। मैं आपको बता नहीं सकता कि मेरी पत्नी या मैंने कितनी बार एक दूसरे को भजन संहिता 84:11 सुनाया है। परमेश्वर अपने लोगों से अच्छी वस्तु दूर नहीं रखता। और क्योंकि जब परमेश्वर बोलता है, तो हम उस पर विश्वास करते हैं, इसलिए हम केवल यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अपनी दिव्य बुद्धि में, प्रभु ने यह तय किया है कि हमारे लिए यही सबसे अच्छा है कि वह इस वरदान को हमसे दूर रखे। यह कठिन बात है। ओह, यह कठिन बात है। परन्तु परमेश्वर की भलाई एक ऐसा आधार है, जिससे हमने अपनी आत्माओं को बाँध रखा है।

जब दु:ख की लहरें चारों ओर से हमसे टकराती हैं, तो हम इस वादे को कसकर थामे रहते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों से अच्छी वस्तुएँ दूर नहीं रखता, और हम क्रूस की ओर देखते हैं और पाते हैं कि, यदि परमेश्वर अपने पुत्र को भी देने के लिए तैयार था, तो क्या हम इस बात पर भरोसा नहीं कर सकते कि हमारी भलाई सुनिश्चित करने के लिए उसे चाहे कुछ भी करना पड़े, वह करेगा? या, जैसा कि हमारे भाई पौलुस ने रोमियों 8:32 में कहा है, "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?"

प्रतीक्षा करते हुए परमेश्वर पर भरोसा करने की आपकी क्षमता आपकी अपनी सामर्थ्य या आपकी भक्ति में नहीं, बल्कि परमेश्वर में निहित है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप अपना शेष जीवन और अनन्तकाल तक उस परमेश्वर में अपने आनन्द और भरोसे को बढ़ाते हुए बिताएँ, जिसने आपको बनाया, जो आपसे प्रेम करता है, और जिसने जीवन के समय को पूरी तरह से व्यवस्थित करते हुए मसीह में आपको छुड़ाया।

चिन्तन के लिए प्रश्न:

1. क्या आपको कभी-कभी प्रतीक्षा के समय में प्रभु से प्रार्थना करना कठिन लगता है? आपको ऐसा क्यों लगता है?
2. पवित्रशास्त्र में ऐसे और कौन से उदाहरण हैं जहाँ लोगों ने प्रभु की प्रतीक्षा की (शायद धीरज और परमेश्वर के समय के बारे में बाइबल की कोई विशेष आयत ढूँढ़ रहे हों), और आप उनके उदाहरणों को अपने वर्तमान प्रतीक्षा के समय पर कैसे लागू कर सकते हैं?
3. आत्मिक समय पर भरोसा करने के बजाय आप कहाँ अपने प्रतीक्षा के समय को बर्बाद करने के परीक्षा में पड़ जाते हैं?

THE MENTORING PROJECT

एलेक्स हैमण्ड एथेंस, जॉर्जिया में क्लीवलैंड रोड बैपटिस्ट चर्च में सहायक पास्टर के तौर पर सेवा करते हैं। वे अपनी पत्नी, ऐम्बर के साथ एथेंस में रहते हैं।